हज़रत इबराहीम (अलै.)

माइल ख़ैराबादी

अनुवादक

कौसर लईक

विषय-सूची

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

'अल्लाह के नाम से जो रहम करनेवाला और बड़ा मेहरबान है'

हज़रत इबराहीम (अलै.)[1]

हज़रत इबराहीम (अलै.) अल्लाह के एक बहुत बड़े रसूल गुज़रे हैं। हज़रत इबराहीम (अलै.) को अल्लाह ने ऐसी मक़बूलियत दी है कि उनको यहूदी भी मानते हैं, ईसाई भी मानते हैं,और मुसलमान भी। हज़रत इबराहीम (अलै.) के हालात हर धर्म की किताबों में पाए जाते हैं, फ़र्क़ यह है कि कहीं कम और कहीं ज़्यादा।

क़ुरआन पढ़ने से मालूम होता है कि आदम (अलै.) और हज़रत नूह (अलै.) के बाद अल्लाह तआला ने हज़रत इबराहीम (अलै.) के हालात बहुत विस्तार के साथ बयान किए हैं। यही हालात हम क़ुरआन का अध्ययन करके लिख रहे हैं।

वतन

आप एशिया का नक़्शा अपने सामने रखिए। भारत के पश्चिम में अरब महासागर है। अरब महासागर के ऊपर उत्तर में अरब देश और फ़ारस के बीच एक खाड़ी है। इसका नाम फ़ारस की खाड़ी है। फ़ारस की खाड़ी के ऊपर देखिए, बसरा बन्दरगाह है। बसरा के आगे बढ़कर एक जगह दजला और फ़ुरात दो नदियाँ आकर मिल जाती हैं। दजला और फ़ुरात के संगम के बाईं ओर फ़ुरात नदी के किनारे 'उर' एक शहर था। यही शहर हज़रत इबराहीम (अलै.) का वतन था, जिसका अब नाम बाक़ी रह गया है, चिह्न मिट गए हैं।

1. अलै. या अलैहि., इसका पूर्णरूप है 'अलैहिस्सलाम' यानी उनपर सलामती और रहमत हो।

कुछ उर के बारे में

हज़रत ईसा (अलै.) से लगभग दो हज़ार एक सौ (2100) वर्ष पू अर्थात् आज से चार हज़ार वर्ष से ज़्यादा दिन हुए, उर का शहर बड़ी तरक़्क़ी प था। बताया जाता है कि इसकी आबादी ढाई लाख से बढ़कर पाँच लाख तक ह गई थी। दूर-दूर तक इस शहर का नाम मशहूर था। पूरब में पामीर और नीलगिर एवं उत्तर-पश्चिम में अनातूलिया से तरह-तरह का व्यापारिक माल यहाँ आता फिर यहाँ से दूसरी जगहों पर जाता। इस प्रकार उर बहुत बड़ी व्यापारिक मण्ड बन गया था। देश की राजधानी भी यही शहर था। उर जिस रियासत क राजधानी था, वह रियासत बहुत बड़ी थी। लोगों का पेशा आम तौर पर व्यापा था। हर प्रकार के कारीगर यहाँ पाए जाते थे। यहाँ के लोग कारोबार में बड़े पक्के और मंझे हुए थे। अपना व्यापारिक राज़ किसी को नहीं बताते थे। एक-दूसरे स होशियार रहते थे। छोटे-बड़े सबको यही धुन सवार थी कि अधिक से अधिक धन कमाएँ और जीवन का आनन्द लें। धन बढ़ाने के लिए ब्याज (सूद) क कारोबार बड़े ज़ोरों पर था। यहाँ के लोग आपस में ख़ूब झगड़ते औ मुक़द्दमेबाज़ियाँ भी करते थे। यहाँ के लोगों के दिल की बात का पता उनकी इन दुआओं से लगता है जो वे अपने ख़ुदाओं से किया करते थे। उनकी दुआ यह हुआ करती थी–

> "ऐ ख़ुदा! हमें अधिक-से-अधिक धन दे। ऐ ख़ुदा! हम मुक़द्दमा जीत जाएँ; हे प्रभु! हमको अधिक-से-अधिक दिनों तक जीवित रख और हमारे लिए धन प्राप्त करने के आसान रास्ते पैदा कर दे।"

रहन-सहन और दीन-धर्म

जिस तरह हमारे देश में लोग जातियों में बँटे हुए हैं और इंसान-इंसान के बीच ऊँच-नीच पाई जाती है, इसी तरह उर के लोग निम्नलिखित तीन जातियों में बँटे हुए थे –

(1) अमीलो :- ये ज़ात-पात, मान-दान और रहन-सहन में सबसे ऊँचे माने जाते थे। इनमें दो तरह के लोग थे। एक तो पुरोहित और पुजारी और दूसरे वे लोग जो हुकूमत में ऊँचे पदों पर और फ़ौजी अफ़सर थे।

(2) मिशकीनो :- इनमें व्यापारी, कारीगर और खेती-बाड़ी करनेवाले लोग थे। ये दूसरे दर्जे के लोग थे।

(3) अरदू :- ग़ुलाम, शूद्र और नीच लोग।

चंद्रवंशी और सूर्यवंशी

जिस तरह हमारे देश में हज़ारों देवी-देवता ख़ुदा की तरह पूजे जाते हैं, उसी तरह वहाँ भी हज़ारों ख़ुदा थे और जिस तरह हमारे देश में क्षत्रिय अपने को सूरज और चाँद की औलाद समझते हैं और सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी कहलाते हैं उसी तरह उर के सबसे ऊँचे लोग चन्द्रवंशी कहे जाते थे। अलग-अलग शहरों और जातियों के अलग-अलग ख़ुदा थे। इन ख़ुदाओं में हर शहर का एक बड़ा ख़ुदा माना जाता था। हर शहर का एक रब्बुल-बलद (शहर का ख़ुदा) या सारे ख़ुदाओं में सबसे बड़ा ख़ुदा-महादेव होता था। उर का सबसे बड़ा ख़ुदा रब्बुल-बदल या महादेव नन्नार (चन्द्र देवता) था। अरब के लोगों ने इसका नाम क़मरीना रखा था, क्योंकि अरबी में क़मर के मानी चाँद होता है। उर के बाद दूसरा बड़ा शहर लरसा था। उसका रब्बुल-बलद और महादेव 'शम्माश' यानी सूरज देवता था। नन्नार (चाँद देवता) और शम्माश (सूरज देवता) के अधीन हज़ारों छोटे-छोटे ख़ुदा थे, जो अधिकतर तारों और ग्रहों के देवता तथा मालिक एवं अधिकार प्राप्त प्रतिनिधि माने जाते थे या फिर ज़मीन के ख़ुदाओं में से थे, यानी हवा का देवता, पानी का देवता, बादल का देवता, पहाड़ों का देवता, नदियों का देवता आदि। लोगों ने आसमानी और ज़मीनी देवताओं की मूर्तियाँ बना ली थीं और उन्हीं मूर्तियों के आगे अपनी मुरादें और ज़रूरत पेश करते थे। उन्हीं के सामने प्रार्थना करते, उन्हीं को पूजते और उन्हीं को अपना संकट मोचन और ज़रूरतें पूरी करनेवाला समझते थे।

नन्नार की शान

नन्नार की मूर्ति उर में सबसे ऊँची पहाड़ी पर एक आलीशान इमारत में रखी थी। उसके क़रीब नन्नार की बीवी 'मनगुल' का मन्दिर था। नन्नार के मन्दिर की शान शाही महल की तरह थी। रोज़ाना रात को एक पुजारिन जाकर उसकी ख़ाबगाह में दुल्हन बनती थी। मन्दिर में बहुत-सी औरतें देवता के लिए समर्पित थीं और उनकी हैसियत देवदासियों (Religious Prostitutes) की-सी थी। वे औरतें बड़ी इज़्ज़त की निगाह से देखी जाती थीं; जो ख़ुदा के नाम पर अपना कुँवारापन क़ुरबान कर दे। कम-से-कम एक बार अपने आपको 'ख़ुदा की राह' में किसी अजनबी के हवाले करना औरत के लिए मुक्ति का रास्ता माना जाता था। अब यह बताना ज़्यादा ज़रूरी नहीं है कि धर्म की आड़ में व्यभिचार के इस बाज़ार से लाभ उठाने वाले अधिकतर पुजारी लोग ही होते थे।

नन्नार सिर्फ़ देवता ही नहीं था, बल्कि देश का सबसे बड़ा ज़मींदार, सबसे बड़ा व्यापारी, सबसे बड़ा उद्योगपति और देश के राजनीतिक जीवन का सबसे बड़ा शासक भी था। अनगिनत बग़ीचे, मकान और ज़मीनें नन्नार के मन्दिर के लिए समर्पित थीं। इस सम्पत्ति की आय के अलावा किसान, व्यापारी, ज़मींदार सब हर प्रकार के अनाज, दूध, सोना, कपड़ा और दूसरी चीज़ें लाकर मन्दिर में भेंट चढ़ाते थे, जिन्हें वुसूल करने के लिए मन्दिर में बहुत-से कर्मचारी मौजूद थे। बहुत-से कारख़ाने मन्दिर के अधीन थे। व्यापारिक कारोबार भी बड़े पैमाने पर मन्दिर की ओर से होता था। ये सब काम देवता की देख-रेख में पुजारी ही अंजाम देते थे। फिर देश का सबसे बड़ा न्यायालय मन्दिर ही में था। पुजारी इसके न्यायधीश थे और उनके फ़ैसले ख़ुदा के फ़ैसले माने जाते थे। ख़ुद शाही ख़ानदान का शासन भी नन्नार ही से सम्बन्धित था। असल बादशाह नन्नार था और वक़्त का बादशाह उसकी ओर से शासन करता था। इस आधार पर बादशाह भी देवताओं में गिना जाता था और ख़ुदा की तरह उसकी भी पूजा की जाती थी।

हज़रत इबराहीम (अलै.) का बाप – आज़र

हजरत इबराहीम (अलै.) का बाप आज़र सबसे ऊँची जाति के अमीलों ख़ानदान से सम्बन्ध रखता था। आज़र राज्य का सबसे बड़ा पुरोहित था। वह लोगों के चढ़ावे और नज़राने वुसूल करता और मूर्तियाँ बनाता और बेचता था। इन मूर्तियों की मुँहमाँगी क़ीमत वुसूल करता था और उसे इन कामों से इतनी आमदनी होती थी कि उतनी आमदनी राज्य की भी नहीं होती थी। आज़र मान-सम्मान और प्रतिष्ठा में उर के बादशाह नमरूद के बाद दूसरे नम्बर पर था लेकिन धन-दौलत की हैसियत से उससे भी बड़ा था।

मूर्ति-पूजा के इस माहौल में, दौलत के लालची लोगों के बीच, उर के सबसे बड़े पुरोहित आज़र के घर हज़रत इबराहीम (अलै.) पैदा हुए। उसी घर में पलने लगे जिसमें रात-दिन मूर्तियाँ बनाई और बेची जाती थीं। अल्लाह की योजना में इबराहीम (अलै.) का नाम नबियों में लिखा था। इसलिए अल्लाह ने उन्हें शुद्ध स्वभाव का और सदाचारी बनाया था। वे मूर्तियाँ बनाते देखते तो बचपन ही में बड़े भोलेपन के साथ बाप से पूछते, "आप क्या बना रहे हैं?" बाप कहता, "मैं लोगों के लिए ख़ुदा बना रहा हूँ।" इबराहीम फिर पूछते, "इन ख़ुदाओं का क्या काम है?" आज़र बताता, "ये ख़ुदा लोगों की ज़रूरतें और मुरादें पूरी करते हैं।"

हज़रत इबराहीम (अलै.) की समझ में यह बात न आती, वे दिल ही दिल में कहते, "ये कैसे ख़ुदा हैं जिनको आदमी बनाता है। ये ख़ुदा तो बेबस हैं। ये ख़ुद दूसरों के मुहताज हैं। ये लोगों की ज़रूरतें कैसे पूरी कर सकते हैं?" यह बात बाप के सामने ज़बान पर भी आ जाती तो आज़र को उस वक़्त बहुत बुरा लगता जब वह लोगों से ख़ुदाओं का सौदा करता होता। वह बेटे को डाँट देता, "ख़बरदार! अगर फिर ऐसी बद-तमीज़ी की बात की तो तुझे बुरी तरह सज़ा दूँगा।"

हज़रत इबराहीम(अलै.) बचपन में इस बात को समझना चाहते थे और बाप डाँट-डपटकर टाल देता था। वे बड़े परेशान थे। कुछ और बड़े हुए तो एक दिन अपने बाप से बड़ी हिम्मत के साथ कह दिया –

"क्या आप बुतों को ख़ुदा बनाते हैं ? मैं तो आपको और आपकी क़ौम को खुली गुमराही में पाता हूँ।"

क़ुरआन के शब्द में–

"इबराहीम का वाक़िया याद करो जब उसने अपने बाप आज़र से कहा था: क्या तू बुतों को ख़ुदा बनाता है ? मैं तो तुझे और तेरी क़ौम को खुली गुमराही में पाता हूँ।" – क़ुरआन, 6:74

आज़र के बाद सब कुछ हज़रत इबराहीम (अलै.) का था। सबसे बड़े पुरोहित की गद्दी और अथाह दौलत के मालिक वही होते। बाप ने देखा कि बेटा उल्टी-सीधी बातें करता है, तो उसे इसका दुख हुआ कि यदि इबराहीम (अलै.) इसी तरह की बातें करते रहे तो उसके कारोबार पर बुरा असर पड़ेगा। इससे ग्राहक टूटेंगे और वह यह सोचकर भी दुःखी रहने लगा कि यदि इबराहीम (अलै.) ने यह पेशा न सँभाला तो सारी दौलत किसी दूसरे के क़ब्ज़े में चली जाएगी। तो उसके बावजूद कि इबराहीम (अलै.) ने बहुत बड़ी बात कह दी थी, आज़र ने बर्दाश्त किया और बोला, "बेटे! मेरे बाद यह सब तुम्हारा ही तो है। क्या तुम पसन्द करोगे कि यह सबसे बड़ी इज़्ज़त की गद्दी और यह अपार दौलत तुम्हारे हाथ से निकल जाए और दूसरे लोग इसके मालिक हों ?"

शादी

हज़रत इबराहीम (अलै.) ने आज़र की नसीहत न मानी तो उसने एक दूसरा उपाय सोचा। दोस्तों और रिश्तेदारों से मश्विरा किया। सभी ने कहा कि इसका इलाज सिर्फ़ शादी है। शादी कर दो यह बदल जाएगा। आज़र ने अपने अमीलो ख़ानदान की और अपने ही घराने की तमाम लड़कियों से ज़्यादा हसीन

और ख़ूबसूरत लड़की 'सारा' से इबराहीम (अलै.) की शादी कर दी। लेकिन शादी के बाद दूसरा गुल खिला।

घर से निकाल दिया

हज़रत सारा बहुत अच्छे स्वभाव की थीं। वे हज़रत इबराहीम (अलै.) का कलिमा पढ़ने लगीं। फिर बारह-तेरह साल का नव युवक भतीजा भी चचा के साथ हो गया। घर के अन्दर इबराहीम (अलै.) की आवाज़ में वज़न पैदा होने लगा। यह हाल देखा तो आज़र ने हज़रत इबराहीम (अलै.) को घर से निकल दिया। हज़रत इबराहीम (अलै.) बड़े नर्म दिल थे। उन्हें बाप से बहुत मुहब्बत थी। वे जानते थे कि गुमराही का अंजाम क्या होता है? उन्होंने बड़े अदब के साथ बाप से कहा –

> "आप पर सलामती हो। मैं आपके लिए अपने रब से दुआ करूँगा कि आपको माफ़ कर दे। वह मेरे ऊपर बड़ा मेहरबान है।"
>
> – क़ुरआन, 19:47

> "मैं आपके लिए माफ़ी ज़रूर चाहूँगा और मेरे अधिकार में कुछ नहीं है कि आपको अल्लाह की पकड़ से बचा लूँ।" – क़ुरआन, 60:4

> हज़रत इबराहीम (अलै.) बाप के लिए दुआ करते रहे कि "ऐ अल्लाह! मेरे बाप को माफ़ कर दे। निस्संदेह वह गुमराह लोगों में से है। और उस दिन मुझे रुसवा न कर जबकि सब इनसान जीवित करके उठाए जाएँगे, जिस दिन न माल काम आएगा और न औलाद। मुक्ति केवल वह पाएगा जो अपने ख़ुदा के सामने भला-चंगा दिल लेकर हाज़िर हुआ हो।" – क़ुरआन, 26: 86-89

हज़रत इबराहीम (अलै.) बाप के लिए यह दुआ करते थे लेकिन जब यक़ीन हो गया कि वह ख़ुदा का खुल्लम-खुल्ला बाग़ी है तो उसके लिए दुआ करनी छोड़ दी और ख़ुदा के बाग़ी की हमदर्दी से रुक गए।

दावती मुहिम

घर से निकलने के बाद उन्होंने बनावटी देवताओं और शिर्क के ख़िलाफ़ मुहिम शुरू कर दी। लोगों के सामने बड़ी अटूट दलीलों से साबित करते कि जिन्हें तुमने ख़ुदा (ईश्वर) मान रखा है, वे ख़ुदा नहीं हो सकते। क़ुरआन में इसी प्रकार की हिकमत और तबलीग़ की कई मिसालें हैं। उनमें से एक यहाँ प्रस्तुत है–

> "फिर जब उसपर रात छा गई, उसने एक तारा देखा। बोला : इसे मेरा रब ठहराते हो !" – क़ुरआन, 6:76

उर के लोग सूरज और चाँद के अलावा तारों को भी देवता और माबूद मानते थे। इसलिए हज़रत इबराहीम (अलै.) ने पहले तारे को निशाना बनाया।

फिर जब वह डूब गया तो (हज़रत इबराहीम (अलै.) ने) कहा, "डूब जानेवालों को ख़ुदा मानना मैं पसन्द नहीं करता।" (क़ुरआन 6:76) फिर जब चाँद चमकता हुआ देखा तो फिर कहा, "अच्छा इसे मेरा रब ठहराते हो !" (क़ुरआन 6:76) फिर जब चाँद डूब गया तो कहा, "यदि मेरे रब ने मेरी रहनुमाई न की होती तो मैं भी गुमराह लोगों में शामिल हो गया होता।"

– क़ुरआन, 6:77

हज़रत इबराहीम (अलै.) का यह कहना चाँद की पूजा करनेवालों के लिए विचार के क़ाबिल था। फिर जब सूरज को रौशन देखा तो कहा, "इसे मेरा रब ठहराते हो! यह सबसे बड़ा है!" – क़ुरआन, 6:78

पर जब वह भी डूब गया तो हज़रत इबराहीम (अलै.) ने बड़े ज़ोरदार शब्दों में कहा–

> "ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! मैं उन सबसे विरक्त हूँ जिन्हें तुम अल्लाह का साझी समझते हो।" – क़ुरआन, 6:78

"मैंने एकाग्र होकर अपना रुख़ उसकी ओर कर लिया जिसने ज़मीन

और आसमानों को पैदा किया और मैं हरगिज़ शिर्क करनेवालों में से नहीं हूँ।" —कुरआन, 6:79

इस तरह दलील के साथ बात आई तो उर के लोग हज़रत इबराहीम (अलै.) से झगड़ने लगे। इन देवी-देवताओं को सब मालूम है जो होनेवाला है। तुम इनसे डरो वरना तबाह हो जाओगे। इसका जो भरपूर और मुँह तोड़ जवाब हज़रत इबराहीम (अलै.) ने दिया, क़ुरआन के शब्दों में इस प्रकार है—

"उसकी क़ौम उससे झगड़ने लगी तो उसने क़ौम से कहः क्या तुम लोग अल्लाह के मामले में मुझसे झगड़ते हो? हालाँकि उसने मुझे सीधी और सच्ची राह दिखा दी है, और मैं तुम्हारे ठहराए हुए झूठे ख़ुदाओं से नहीं डरता। हाँ! अगर मेरा रब कुछ चाहे तो वह ज़रूर हो सकता है, मेरे रब का इल्म हर चीज़ पर छाया है। फिर क्या तुम होश में नहीं आओगे? और आख़िर मैं तुम्हारे ठहराए हुए शरीकों (झूठे ख़ुदाओं) से कैसे डरूँ, जबकि तुम लोग अल्लाह के साथ उन चीज़ों को ख़ुदाई में शरीक ठहराते हुए नहीं डरते जिनके लिए उसने तुमपर कोई प्रमाण अवतरित नहीं किया है? हम दोनों पक्षों में से कौन अधिक निडर और संतुष्टि के योग्य है? बताओ अगर तुम कुछ ज्ञान रखते हो। वास्तव में शान्ति उन्हीं के लिए है और सही रास्ते पर वही हैं जो ईमान लाए और जिन्होंने अपने ईमान में किसी ज़ुल्म (शिर्क) की मिलावट नहीं की।" —कुरआन, 6:80-82

बुतों को तोड़ना

हज़रत इबराहीम (अलै.) इस तरह अपनी क़ौम को समझाते रहे, लेकिन उन लोगों के दिमाग़ से देवी-देवताओं का डर न निकल सका। वे यही समझते रहे थे कि उनकी शान में बेअदबी करना अपनी बरबादी मोल लेना है। हज़रत इबराहीम (अलै.) साफ़-साफ़ कहते थे कि इनको तो तुम अपने हाथ से बनाते हो, ये तो ख़ुद तुम्हारे मुहताज हैं, न कि तुम इनके मुहताज हो। इनमें

अपनी सुरक्षा करने की शक्ति तो है नहीं, तुमको क्या फ़ायदा व नुक़्सान पहुँचा सकते हैं।

क़ौम के लोगों ने जब किसी तरह से ये बातें न समझी तो हज़रत इबराहीम (अलै.) ने समझाने की एक आख़िरी कोशिश की। उन्होंने छुपे शब्दों में कुछ लोगों के सामने कह दिया –

> "और ख़ुदा की क़सम! मैं तुम्हारी अनुपस्थिति में अवश्य तुम्हारे बुतों की ख़बर लूँगा।" – क़ुरआन, 21:57

हज़रत इबराहीम (अलै.) को बुतों की ख़बर लेने का अवसर उस वक़्त मिला जब उनकी क़ौम के लोग अपना राष्ट्रीय त्यौहार मानने के लिए गए हुए थे। हज़रत इबराहीम (अलै.) नहीं गए। जब सब लोग चले गए तो आप बुतख़ाने में घुस गए। बुतों से कहा, "(ये मिठाइयाँ सामने रखी हैं) ख़ाते क्यों नहीं तुम्हें क्या हो गया है ? तुम बोलते भी नहीं ?"

इसके बाद हज़रत इबराहीम (अलै.) ने बड़े बुत को छोड़कर सभी को तोड़ डाला। फिर जब लोग वापस आए और अपने बुतों का यह हाल देखकर आपस में कहने लगे, "यह हरकत किस आदमी ने की है ?" कुछ लोगों ने बताया की इबराहीम ऐसी बातें करता है। यह उसी की हरकत है। हज़रत इबराहीम (अलै.) को बुलाया गया। उनसे पूछा गया, "यह किसने किया?" आपने जवाब दिया, "अपने बड़े बुत से पूछ लो, यह तो सब कुछ जानते हैं और बड़े ज़बरदस्त हैं, पूछ लो यदि यह बोलते हों।"

नमरूद की बहस

इस घटना से सम्बन्धित उल्लेख क़ुरआन में कई जगह आया है। "इनसे पूछ लो यदि यह बोलते हों" ऐसी चुभती हुई बात थी कि लोग चुप होकर रह गए। लेकिन स्पष्ट है कि वे अपने देवताओं का अपमान किसी तरह सहन नहीं कर सकते थे। उन्होंने उर के बादशाह से शिकायत की। उस बादशाह का नाम

नमरूद था। नमरूद ने इबराहीम (अलै.) को बुलाया और लगा बहस करने। हज़रत इबराहीम (अलै.) उसे अल्लाह का पैग़ाम बता रहे थे। वह इस बात पर झगड़ पड़ा। वह समझता था कि उर का मालिक तो मैं हूँ। यह मेरे सिवा किसकी तरफ़ लोगों को बुला रहा है। उसने पूछा, "ऐ इबराहीम ! तेरा रब कौन है ?' जब इबराहीम(अलै.) ने कहा कि मेरा रब वह है जो मारता और जिलाता है, तो वह बोला, "मैं भी मारता और जिलाता हूँ।" इबराहीम (अलै.) ने कहा कि अच्छा सुन ! मेरा रब पूरब से सूरज निकालता है, तू ज़रा पश्चिम से निकाल दे। यह सुनकर वह हक्का-बक्का रह गया।

आग की सज़ा

असत्य पर चलनेवालों का हमेशा का यह तरीक़ा रहा है और आज भी है कि जब उसूली बातचीत में हार जाते हैं तो उनसे यह नहीं होता कि सच को सच मान लें, बल्कि उल्टे वे सत्य पर चलनेवालों को धौंस-धांधली और बलपूर्वक दबाने की कोशिश करते हैं। उर के लोग भी इसी अमल पर ज़ोर दे रहे थे कि इस व्यक्ति को मार डाला जाए। फ़ैसला सुना दिया गया कि इबराहीम (अलै.) को आग में जला दिया जाए। आग का अलाव तैयार किया गया और हज़रत इबराहीम (अलै.) आग में फेंक दिए गए।

चूँकि हज़रत इबराहीम (अलै.) अल्लाह के रसूल थे इसलिए अल्लाह ने उनकी रक्षा अपने ज़िम्मे ले ली थी। अतः अल्लाह ने आग को हुक्म दिया,

> "ऐ आग ! ठण्डी हो जा और सलामती बन जा इबराहीम पर।"
>
> —क़ुरआन, 21:69

अल्लाह के हुक्म से आग इबराहीम (अलै.) पर ठण्डी हो गई। आग में फेंक देना इतनी बड़ी कार्यवाई थी कि फिर वहाँ हज़रत इबराहीम (अलै.) के रहने की गुंजाइश नहीं हो सकती थी। अल्लाह ने हुक्म दिया कि अब यह जगह छोड़कर कहीं और चले जाओ। हज़रत इबराहीम (अलै.) अपनी बीवी सारा (रज़ि.) और भतीजे हज़रत लूत को लेकर उर से निकल गए। हज़रत लूत

(अलै.) की उम्र उस वक़्त बारह-तेरह वर्ष की थी। हज़रत इबराहीम (अलै.) ने अल्लाह के दीन के लिए कितनी बड़ी क़ुर्बानियाँ दीं। माँ-बाप को छोड़ा, धन-दौलत और उर के पुरोहित की गद्दी छोड़ी। आग में फेंके जाने के वक़्त जान की बाज़ी लगा दी और अब वतन भी छोड़ दिया और जंगल-बियाबान की ओर चल पड़े। उस समय आज कल की तरह न सवारियाँ थीं और न सड़कें, न रेलवे लाइनें और न ही शांतिपूर्ण रास्ते थे। मीलों रेगिस्तान ही रेगिस्तान, जंगल ही जंगल थे। जंगलों में ख़ूँख़ार जानवरों और ज़हरीले कीड़ों का सामना, रास्ते में पहाड़ आ जाए तो दूर तक पहाड़ ही पहाड़ का सिलसिला। रास्ते में यह भी ख़तरा कि कोई पकड़ ले और ग़ुलाम बनाकर बेच डाले। ये सिर्फ़ ढाई आदमी किसी का मुक़ाबला भी नहीं कर सकते थे। मगर यह कहकर क़दम उठा दिया, "मैं अपने रब की ओर जाता हूँ, वही मेरी रहनुमाई करेगा।"

हिजरत

इस यक़ीन के साथ हज़रत इबराहीम (अलै.) ने वतन छोड़ दिया और अल्लाह जिस ओर ले गया उस ओर चले गए। वतन से निकलने के बाद उरदुन गए, फिर शाम (सीरिया) गए, फ़िलस्तीन गए, उसके बाद मिस्र पहुँचे। हर जगह उन्होंने लोगों को एक ख़ुदा की बंदगी की ओर बुलाया। आख़िरत के अज़ाब से डराया। मिस्र का बादशाह आप की दावत से बहुत प्रभावित हुआ। कहा जाता है कि वह मुसलमान तो नहीं हुआ लेकिन आपके पवित्र आचरण और आपकी दावत का उसपर इतना प्रभाव पड़ा कि जब आप मिस्र से चले तो उसने बहुत-से तोहफ़े पेश किए।

औलाद के लिए दुआ

अभी तक हज़रत इबराहीम (अलै.) के कोई औलाद न थी। हज़रत सारा के बारे में यह विश्वास हो गया था कि वे बांझ हैं। हज़रत इबराहीम (अलै.) अल्लाह के दीन का प्रचार-प्रसार करते-करते बूढ़े हो चुके थे और

उनका बदन बिल्कुल टूट चुका था। अल्लाह से दुआ करते थे कि ऐ मेरे रब! जिस मिशन पर तूने मुझे लगाया है, उस मिशन को क़ायम रखने के लिए मुझे नेक औलाद दे, जो मेरे बाद इस काम को आगे बढ़ा सके। क़ुरआन में आपकी दुआ के शब्द ये हैं–

"ऐ मेरे रब! मुझे कोई नेक औलाद प्रदान कर।"

– क़ुरआन, 37:100

अल्लाह ने आपकी दुआ क़बूल कर ली और ख़ुशख़बरी सुनाई–

"तो हमने उसे एक बुर्दबार (सहनशील) बेटे की ख़ुशख़बरी दी।"

– क़ुरआन, 37:101

हिजाज़ की ओर

अब हज़रत इबराहीम (अलै.) अल्लाह के हुक्म से हज़रत सारा, हज़रत हाजरा और हज़रत लूत (अलै.) के साथ हिजाज़ की ओर रवाना हुए। रास्ते में कनआन के इलाक़े में कुछ दिन ठहरे। यहाँ हज़रत हाजरा से हज़रत इसमाईल पैदा हुए।

बुढ़ापे में औलाद पाई तो हज़रत इबराहीम (अलै.) बहुत ख़ुश हुए। अल्लाह का शुक्र अदा किया। इसी ज़माने में अल्लाह का हुक्म मिला कि हमने ख़ाना-काबा के लिए जगह तय कर ली है। तुम वहाँ जाओ।

"और याद करो जब हमने इबराहीम के लिए इस घर ख़ाना-काबा की जगह तय की।" – क़ुरआन 22:26

अल्लाह का हुक्म मिला तो हज़रत लूत (अलै.) को लेकर 'सुदूम' पहुँचे। सुदूम एक केन्द्रीय स्थल था। वहाँ चारों ओर से क़ाफ़िले आया करते थे। सुदूम को तबलीग़ी मर्कज़ (प्रचार-केंद्र) बनाकर हज़रत लूत (अलै.) को ज़िम्मेदार बनाया कि वे दावत व तबलीग़ (प्रचार-प्रसार) का काम करें। इसके

बाद वापस आए और हज़रत हाजरा और हज़रत इसमाईल को लेकर 'उस घर' की जगह की तरफ़ रवाना हो गए जो अल्लाह ने मुक़र्रर की थी। हज़रत इबराहीम (अलै.) ठीक उस जगह पहुँचे जहाँ अब ख़ाना-काबा है। हुक्म हुआ कि हज़रत हाजरा और इस छोटे बच्चे को यहीं छोड़ दो और वापस जाओ। हज़रत इबराहीम (अलै.) ने अल्लाह के हुक्म के आगे सिर झुका दिया। दिल की क्या हालत हुई होगी ख़ुदा ही बेहतर जानता है। बुढ़ापे में औलाद से आँखें ठण्डी हुई थीं कि यह हुक्म मिला। मगर वाह! अल्लाह का बन्दा हो तो ऐसा! हज़रत इबराहीम (अलै.) ने एक मशकीज़ा पानी और एक थैला खजूरें हज़रत हाजरा को दीं और वहाँ से चल दिए। यह देखकर हज़रत हाजरा को बड़ा आश्चर्य हुआ कि क्या बात है। वे सोचती रहीं कि बड़ी दुआओं के बाद एक चाँद-सा बच्चा अल्लाह ने दिया, उसे यहाँ जहाँ कोसों-मीलों तक आदमी का नामो निशान नहीं है और न यह जगह रहने के लायक़, ऐसी सुनसान और रेगिस्तानी जगह पर छोड़े जा रहे हैं। वह पीछे-पीछे दौड़ीं और पुकारने लगीं कि आप हमें ऐसी जगह छोड़े जा रहे हैं जहाँ न पानी है और न हरियाली।

हज़रत इबराहीम (अलै.) ने न पलटकर देखा और न जवाब दिया। हज़रत हाजरा ने यह देखा तो समझ गईं कि शायद अल्लाह की ओर से यही हुक्म मिला है। ये सोचकर उन्होंने ऊँची आवाज़ में पूछा, "क्या आपको अल्लाह ने ऐसा करने का हुक्म दिया है?" हज़रत इबराहीम (अलै.) ने मुड़े बिना ही जवाब दिया, "हाँ।"

हज़रत हाजरा (रज़ि.) बहुत दिनों से हज़रत इबराहीम (अलै.) के साथ रह रही थीं और तरबियत हासिल कर रही थीं। तुरन्त सारी बातें समझ गईं और बोलीं, "यदि यह बात है तो अल्लाह हमारी ख़ुद हिफ़ाज़त करेगा।"

हज़रत इबराहीम (अलै.) वापस जा रहे थे। थोड़ी दूर चलकर एक पहाड़ी के दामन में ठहरे। बीवी और बच्चे की ओर या इससे ज़्यादा सही यह है कि अल्लाह के मुक़र्रर किए हुए उस घर की जगह (ख़ाना-काबा) की ओर मुँह करके यह दुआ माँगी–

"ऐ हमारे रब! मैंने एक ऐसी घाटी में अपनी संतान के एक हिस्से को लाकर बसाया है, जहाँ न पानी है और न हरियाली। ऐ पालनहार! यह मैंने इसलिए किया है ताकि ये यहाँ नमाज़ क़ायम करें। इसलिए तू लोगों के दिलों को इनका अभिलाषी बना दे और खाने को फल दे, शायद कि ये शुक्र अदा करनेवाले बनें।" — क़ुरआन, 14:37

ज़मज़म का उबलना

हज़रत इबराहीम (अलै.) यह दुआ माँगकर वापस चले गए। यहाँ हज़रत हाजरा अपने दूध-पीते बच्चे के साथ अकेली रह गईं। खजूर और पानी ख़त्म हो गया तो भूख-प्यास ने सताना शुरू कर दिया। यह सोचकर कि शायद कोई क़ाफ़िला कहीं जा रहा हो, तो उससे पानी माँग लें कभी सफ़ा नामक पहाड़ी पर चढ़ जातीं तो कभी मरवा नामक पहाड़ी पर देखतीं। इस प्रकार उन्होंने सफ़ा-मरवा के बीच सात चक्कर लगाए, लेकिन किसी तरफ़ कोई दिखाई न दिया। आख़िरी बार वह मरवा पर थीं कि एक आवाज़ सुनी। इधर-उधर देखा तो कोई नज़र नहीं आया। आवाज़ लगातार जारी थी, लेकिन कोई नज़र नहीं आ रहा था। बेताब होकर बोलीं, "ऐ शख़्स! तूने मुझे अपनी आवाज़ तो सुना दी, ज़रा यह तो बता कि मेरी प्यास का भी तेरे पास कुछ इलाज है?"

अचानक जहाँ बच्चा लेटा हुआ था, वहाँ नज़र डाली तो एक फ़रिश्ते को देखा जो अपने पैर की एड़ी से ज़मीन खोद रहा था। उसने ज़मीन को इतना खोदा कि पानी निकलने लगा। हज़रत हाजरा दौड़ीं और जल्दी-जल्दी मशकीज़ा (पानी रखने का एक सामान) पानी से भरने लगीं। फिर यह सोचकर कि कहीं पानी इधर-उधर बहकर रेत में सूख न जाए, उसके आस-पास मिट्टी का बाँध बना दिया। लेकिन यह देखकर उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ की जितना पानी वह भरती जा रही थीं, उतना ही वह उबलता चला आता था।

हज़रत हाजरा ने ख़ुद पानी पिया। पानी पीने से उनकी छाती में दूध उतरा तो बच्चे को पिलाया। फ़रिश्ता असल में हज़रत जिबरील (अलै.) थे।

उन्होंने कहा, "किसी तरह की फ़िक्र न करो। यहाँ अल्लाह का घर है, जिसे यह बच्चा और इसका बाप दोनों मिलकर बनाएँगे और अल्लाह इस घर को नष्ट नहीं करेगा।"

क़बीला जुरहुम का आना

हज़रत जिबरील (अलै.) की बात से हज़रत हाजरा को बहुत तसल्ली मिली और बच्चे के फलने-फूलने का यक़ीन हो गया। कुछ दिनों के बाद क़बीला जुरहुम के कुछ लोग उधर से गुज़रे। उन्होंने देखा कि क़रीब ही एक जगह कुछ चिड़ियाँ उड़ रही हैं। जुरहुम के लोग समझ गए कि यहाँ आस-पास ज़रूर पानी का चश्मा (स्रोत) है। उन्होंने कुछ आदमी पानी की तलाश में भेजे। वे वहाँ तक आए और वापस जाकर सरदार से कहा कि यहाँ निकट में ही पानी है और वहाँ केवल एक औरत और उसका एक बच्चा मौजूद है। यह सुनकर जुरहुम क़बीले के लोग दौड़कर वहाँ गए और हज़रत हाजरा से मिले। उनसे ठहरने की इजाज़त माँगी। इजाज़त मिल गई और वे लोग आस-पास आबाद हो गए और हज़रत इसमाईल पलते और बढ़ते रहे। इस प्रकार हज़रत इबराहीम (अलै.) की उस दुआ का भी असर दिखाई देने लगा था जो उन्होंने वापस होते वक़्त पहाड़ों के दामन में की थी।

अन्तिम और सबसे बड़ी आज़माइश

अब तक हज़रत इबराहीम (अलै.) पर जो भी आज़माइशें आईं, अल्लाह ने उन सब में कामयाब किया। उन्होंने अल्लाह को ख़ुश करने के लिए बाप और क़ौम से टक्कर ली। धन-दौलत और पुरोहित की गद्दी ठुकरा दी। वतन छोड़ा। जंगल-बियाबान में भटकते फिरे। आख़िर में जब अल्लाह ने बुढ़ापे में औलाद दी तो अब एक और आज़माइश का सामना करना पड़ा।

हज़रत इसमाईल (अलै.) तेरह-चौदह साल के हो चुके थे। इस अवधि में हज़रत इबराहीम (अलै.) बीवी और बच्चों से मिलने जाया करते थे। एक बार

गए तो उन्होंने नव उम्र बेटे से जो कुछ कहा, क़ुरआन के शब्दों में इस प्रकार है –

"तो जब वह लड़का दौड़-धूप की उम्र को पहुँच गया तो (एक दिन) इबराहीम (अलै.) ने उससे कहा : बेटा! मैंने सपना देखा है कि मैं तुझे ज़बह कर रहा हूँ। अब तू बता, तेरा क्या ख़याल है? उसने कहा : अब्बाजान! आपको जो हुक्म दिया जा रहा है उसे कर डालिए। आप इंशाअल्लाह मुझे सब्र करनेवाला पाएँगे।"

– क़ुरआन, 37:102

हज़रत इसमाईल (अलै.) का बिना किसी झिझक के यह कहना साबित करता है कि हज़रत हाजरा ने उनकी बेहतरीन तर्बियत की थी। हज़रत इसमाईल (अलै.) जानते थे कि नबी का ख़्वाब कभी झूठा नहीं होता। उन्होंने पूरे हौसले के साथ अल्लाह की राह में क़ुरबान होने के लिए ख़ुद को पेश कर दिया। क़ुरआन में है –

"फिर जब उन दोनों ने (अल्लाह के आदेश के आगे) अपने आपको समर्पित कर दिया और उसने (इबराहीम ने) ने अपने बेटे को माथे के बल गिरा दिया।" – क़ुरआन, 37:103

माथे के बल इसलिए गिराया कि ज़बह करते वक़्त आँखें चार न हों और बाप की मुहब्बत में पाँव न डगमगा दे। चाहा कि छूरी फेर दें कि अल्लाह ने आवाज़ दी–

"....... ऐ इबराहीम! तूने अपना सपना सच कर दिखाया। निस्सन्देह हम नेकी करनेवालों को ऐसा ही बदला देते हैं। निस्संदेह यह एक खुली आज़माइश थी।" – क़ुरआन, 37:104

आज़ामाइश तो थी ही, लेकिन अल्लाह ने हज़रत इसमाईल (अलै.) को बचा लिया। इस आज़माइश में हज़रत इबराहीम (अलै.) की कामयाबी का जो इनाम दिया, वह क़ुरआन में इस प्रकार बयान किया गया है–

"और हमने बड़ी क़ुरबानी (इस बच्चे की जान के) बदले में देकर, इस बच्चे को छुड़ा लिया और उसकी प्रशंसा और बड़ाई हमेशा के लिए बाद की नस्लों में छोड़ दी। सलाम है इबराहीम पर, हम उत्तमकारों को ऐसा ही बदला देते हैं।" —क़ुरआन, 37:107-110

अल्लाह ने एक मोटा-ताज़ा मेंढ़ा ज़बह करने का हुक्म दिया। यह इस के बदले में था कि हज़रत इबराहीम (अलै.) अपने बेटे को ज़बह करनेवाले थे और अल्लाह ने ठीक समय पर रोक दिया था। इसका इनआम अल्लाह की ओर से यह मिला कि इस क़ुरबानी को इबराहीम (अलै.) की सुन्नत और तरीक़ा घोषित करके क़ियामत तक के लिए ईमानवालों में जारी कर दिया कि हर साल इसी तारीख़ को यानी 10 ज़िलहिज्जा को जानवरों की क़ुरबानी दें और यह क़ुरबानी करते वक़्त हज़रत इबराहीम (अलै.) की उन तमाम क़ुरबानियों को याद करें जो उन्होंने उर से लेकर यहाँ तक की थीं।

और यह इनआम कितना प्यारा है कि हमेशा के लिए उनपर दुरूद व सलाम की बारिश होती रहे। प्यारे नबी मुहम्मद (सल्ल.) ने अपनी उम्मत को हर नमाज़ में इस तरह दुरूद व सलाम भेजने के लिए सिखाया है –

" ऐ अल्लाह! हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) पर और उनकी औलाद पर उसी तरह दुरूद व सलाम भेज जिस तरह तूने हज़रत इबराहीम (अलै.) और उनकी औलाद पर सलामती भेजी। निस्संदेह तू तारीफ़वाला और बुज़ुर्गीवाला है।"

इमामत का ताज

इसके बाद अल्लाह ने सनद दे दी–

"बेशक वह हमारे मोमिन बन्दों में से था।" —क़ुरआन, 37:111

क़ुरआन में एक जगह और फ़रमाया–

"याद करो कि जब इबराहीम को उसके रब ने कुछ बातों में आज़माया और वह उन सबमें पूरा उतर गया तो उसने कहा: मैं तुझे सब लोगों, का पेशवा (इमाम) बनानेवाला हूँ।"

– क़ुरआन, 2:124

अब देखिए हज़रत इबराहीम (अलै.) की इच्छा। उन्होंने रब से प्रार्थना की–

"ऐ मेरे रब! क्या मेरी औलाद के लिए भी यही वादा है?"

अल्लाह ने फ़रमाया "मेरा वादा ज़ालिमों से नहीं।"

यानी ऐ इबराहीम! तेरी औलाद में से जो तेरी पैरवी करेंगे, उनके लिए मेरा वादा है। लेकिन जो मेरी पैरवी न करेंगे, वे ज़ालिम हैं। उन ज़ालिमों से मेरा वादा नहीं है। उक्त आयत से हमारे फ़ुक़हा (विद्वानों) ने जो निष्कर्ष निकाले हैं, वे उचित मालूम होते हैं। इसी लिए ज़रूरी समझते हुए उन निष्कर्षों को भी दर्ज किया जाता है –

- अल्लाह की नज़र में ज़ात-पात, ख़ानदान और रंग व नस्ल के आधार पर कोई बड़ा-छोटा नहीं होता, बल्कि अल्लाह के नज़दीक तुममें बड़ा और शरीफ़ वह है जो तुममें सबसे ज़्यादा ख़ुदा से डरनेवाला हो।
- इमामत किसी व्यक्ति को विरासत में नहीं मिलती यानी यह ख़ानदानी जायदाद नहीं है कि बाप से बेटे को मिले। यदि वारिस इस योग्य हुए तो ठीक वरना किसी दूसरे ऐसे व्यक्ति को मिलेगी जो अल्लाह से डरनेवाला हो।
- अल्लाह की ओर से पुरस्कार एवं सम्मान के वादे उसके उपकारी बन्दों के लिए हैं जो हज़रत इबराहीम (अलै.) की तरह क़ुरबानियाँ पेश करें और वे नेक हों।
- अल्लाह के यहाँ किसी के ज़बानी वादे का कोई महत्व नहीं, जब तक कि वह

व्यक्ति अपने व्यवहार से इसका प्रमाण न दे। इसके उदाहरण निम्नलिखित हैं –

"और हम तुम्हें अवश्य ही भय, भूख, जान-माल की हानियों और आमदनियों के घाटे में डालकर आज़माएँगे।" – क़ुरआन, 2:155

"क्या लोगों ने यह समझ रखा है कि वे सिर्फ़ इतना कहने पर छोड़ दिए जाएँगे कि हम ईमान ले आए और उनको आज़माया न जाएगा, हालाँकि हमने उनसे पहले लोगों को भी आज़माया है, ताकि अल्लाह जान ले कि कौन सच्चा है और कौन झूठा।" – क़ुरआन, 29:2-3

"और हम तुम्हें ज़रूर आज़माएँगे यहाँ तक कि हम जान लें कि तुममें से कौन मुजाहिद है और कौन सब्र करनेवाला, और तुम्हारी हालतों को जाँचेंगे।" – क़ुरआन, 47:31

काबा का निर्माण

"याद करो वह समय जब हमने इबराहीम के लिए इस (ख़ाना-काबा) की जगह चुनी थी (इस हुक्म के साथ) कि मेरे साथ किसी को साझी न ठहराओ और मेरे घर को तवाफ़ (परिक्रमा) करनेवालों और खड़े होने और झुकने और सज्दा करनेवालों के लिए पाक-साफ़ रखो।"

– क़ुरआन, 22:26

हज़रत इबराहीम (अलै.) को अल्लाह का यह हुक्म पहले ही मिल चुका था। यही हुक्म पाकर तो आपने हज़रत हाजरा को दूध पीते बच्चे के साथ उस जगह ठहराया था। अब हज़रत इबराहीम (अलै.) सभी आज़माइशों में खरे उतर चुके थे और आपके सिर पर अल्लाह ने सम्पूर्ण जगत् की इमामत का ताज रख दिया था, इसलिए आपने अल्लाह का घर बनाने के लिए सोचा। हज़रत इबराहीम (अलै.) और हज़रत इसमाईल (अलै.) अल्लाह का घर बनाने लगे। हज़रत इसमाईल (अलै.) पहाड़ से पत्थर लाते और हज़रत इबराहीम (अलै.)

दीवार उठाते। क़ुरआन कहता है–

"और याद करो कि जब इबराहीम और इसमाईल इस घर की दीवारें उठा रहे थे, (तो उन्होंने दुआ की) ऐ हमारे रब! हमसे ख़िदमत क़बूल फ़रमा ले। तू सबकी सुनने और जाननेवाला है।"

– क़ुरआन, 2:127

इसके साथ यह भी दुआ करते जाते थे–

"ऐ रब! हम दोनों को अपना मुस्लिम (हुक्म माननेवाला) बना। हमारी नस्ल से एक ऐसी क़ौम उठा जो तेरी मुस्लिम (अर्थात् तेरे हुक्म को माननेवाली) हो। हमें अपने इबादत के तरीक़े बता और हमारी कोताहियों को माफ़ कर। तू बड़ा माफ़ करनेवाला और रहम करनेवाला है।" – क़ुरआन, 2:128

और यह दुआ भी करते थे जिसमें हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) की ओर इशारा है–

"और ऐ रब! इन लोगों में ख़ुद इन्हीं की क़ौम से एक ऐसा रसूल उठाइयो जो इन्हें तेरी आयतें सुनाए, इनको किताब और हिकमत (तत्त्वदर्शिता) की शिक्षा दे और इनकी ज़िन्दगी सँवार दे। तू बड़ा प्रभुत्वशाली और तत्त्वदर्शी है।" – क़ुरआन, 2:129

हज़रत इबराहीम (अलै.) यह दुआ कर रहे थे तो यह भी ख़याल आया कि यह जगह तो पूर्णतः रेगिस्तानी है और इसके आसपास सूखे पहाड़ हैं, तो स्वतः यह दुआ भी ज़बान पर आ गई –

"और जब इबराहीम ने अर्ज़ किया, ऐ मेरे रब! इस ज़मीन को पुर-अमन (शान्तिमय भूभाग) बना और इसके रहनेवालों में से उन लोगों को, जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाएँ, फलों की रोज़ी प्रदान कर।" – क़ुरआन, 2:126

दुआएँ क़बूल हुईं

अल्लाह ने हज़रत इबराहीम (अलै.) की सारी दुआएँ क़बूल कीं।

• हज़रत इबराहीम (अलै.) ने एक दुआ यह माँगी थी कि लोगों का दिल उनकी ओर माइल (आकृष्ट) कर दे। देख लीजिए आज अल्लाह के बन्दों के दिल हज़रत इबराहीम (अलै.), हज़रत इसमाईल (अलै.) और ख़ाना काबा की तरफ़ माइल हैं। आज ही नहीं, उसी वक़्त से माइल होना शुरू हो गए थे जबकि हज़रत हाजरा अपने दूध पीते बच्चे के साथ वहाँ अकेली और बेसहारा पड़ी थीं। अल्लाह ने क़बीला जुरहम को भेज दिया था। इसके बाद ख़ाना क़ाबा अरबों की तवज्जोह का केन्द्र बन गया था। लोग उसी समय से काबा की ज़ियारत (दर्शन) को आने लगे थे।

• हज़रत इबराहीम (अलै.) ने दुआ माँगी थी–

"ऐ रब! इस ज़मीन को शान्तिमय बना दे और यहाँ के रहनेवालों को फलों की रोज़ी (आजीविका) प्रदान कर।"

यह दुआ भी क़बूल हुई। शुरू ही से लोग वहाँ आने लगे थे और खजूरों और दूसरे फलों का व्यवसाय आम हो गया था। आज यह हाल है कि मक्का में अल्लाह का रिज़्क़ भरा पड़ा है, और वहाँ शान्ति का हाल यह है और यह था कि शुरू ही से उस ज़मीन पर लड़ना और जंग करना बुरा माना जाने लगा, बल्कि हज से पहले और बाद जबकि काबा की ज़ियारत करनेवाले दूर और नज़दीक से आते थे तो उनको चार माह इस यात्रा में लग जाते थे, इसलिए लोगों ने ख़ुद ही और फिर अल्लाह ने इन चार महीनों को हराम(प्रतिष्ठित) घोषित कर दिया। अल्लाह फ़रमाता है–

"क्या ये देखते नहीं कि हम ने एक शांतिमय हरम बना दिया है, हालांकि इनके आस-पास लोग उचक लिए जाते हैं। क्या फिर भी ये

लोग झूठ मानते हैं और अल्लाह की दी हुई नेमत का इनकार करते हैं?"

—क़ुरआन, 29:16

- रजब, ज़ी-क़ादा, ज़िल-हिज्जा और मुहर्रम महीनों के एहतिराम का यह हाल था कि यदि किसी का दुश्मन भी हरम में पहुँच जाता तो उस पर हाथ डालने की हिम्मत किसी को न होती थी।

- दोस्त और दुश्मन ख़ाना काबा की परिक्रमा करते होते और एक-दूसरे को बुरे शब्द कहने की हिम्मत न करते।

- यदि कोई व्यक्ति अपने बाप या बेटे के हत्यारे को देखता था तो क़रीब होने के बाद भी कुछ नहीं कह सकता था।

- इन चार महीनों में जंगें बन्द हो जातीं और रास्ते सुरक्षित हो जाते। एक क़बीले के लोग अपने दुश्मनों की बस्ती से बिना किसी डर के गुज़र जाते थे।

- इंसान तो इंसान जानवर, परिन्दे और पेड़-पत्ते तक सुरक्षित रहते थे। कोई व्यक्ति किसी पेड़ के पत्ते और टहनियाँ नहीं तोड़ सकता था। (यह शायद इसलिए था ताकि मुसाफ़िर पेड़ के साये में बैठ सकें)।

- आज भी देखिए, सारी दुनिया में क़दम-क़दम पर जुर्म पर जुर्म होते रहते हैं, डाके पड़ते हैं, चोरियाँ होती हैं, क़त्लेआम होता है, लेकिन ख़ाना काबा की ज़मीन पर जाएँ तो पाएँगे कि इन जुर्मों का नामो निशान भी नहीं है। लोग इतने निश्चिन्त हैं कि घरों में ताले तक नहीं लगाते। नमाज़ों के वक़्त दुकानदार दुकानें खुली छोड़कर चले जाते हैं और किसी का ख़याल भी दुकानों की दौलत पर नहीं जाता।

- और हज़रत इबराहीम (अलै.) की वह दुआ कि ऐ रब! यहाँ के लोगों में इन्हीं की क़ौम से ऐसा रसूल उठा जो इन्हें किताब और हिकमत की शिक्षा दे, वह दुआ मुहम्मद (सल्ल.) और क़ुरआन के रूप में क़बूल हुई।

मुहम्मद (सल्ल.) और क़ुरआन मजीद

हज़रत इसमाईल (अलै.) के बाद ढाई हज़ार वर्ष बाद अरब के अन्दर अल्लाह के आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) पैदा हुए। आप (सल्ल.) के बाद कोई नबी नहीं हुआ। उस ढाई हज़ार वर्ष की बड़ी अवधि में अरबों ने हज़रत इसमाईल (अलै.) की बहुत-सी शिक्षाओं को भुला दिया था। सबसे बड़ा ज़ुल्म यह किया था कि ख़ाना काबा, जो सिर्फ़ अल्लाह की इबादत के लिए बनाया गया था और जो इसलिए बनाया गया था कि लोग यहाँ आकर तौहीद की शिक्षा हासिल करें, लेकिन उसी खाना काबा के अन्दर अरबों ने अपने-अपने बुत सजा रखे थे और पूजा किया करते थे। ये बुत 360 थे। सबसे बड़ा बुत हुबल था। हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) जब नबी बने और आपको अल्लाह ने क़ुरआन दिया तो आप (सल्ल.) ने उन बुतों को काबा से निकाल दिया और काबा को उन बुतों से पाक किया। अल्लाह का हुक्म हुआ कि मुशरिक (अनेक ख़ुदाओं को माननेवाले) इसके नज़दीक न आएँ, तो दुनिया गवाह है कि कोई मुशरिक हरम में दाख़िल नहीं हो सकता।

क़ुरआन की गवाहियाँ और एलान

- "बेशक सबसे पहली इबादतगाह जो इंसानों के लिए बनी है, वह वही है जो मक्का में स्थित है। उसको भलाई और बरकत दी गई है और दुनियावालों के लिए सही रास्ता दिखानेवाला केन्द्र बना दिया गया।"

  —क़ुरआन, 3:96

- "इसमें खुली निशानियाँ हैं और मक़ामे इबराहीम है।"

  —क़ुरआन, 3:97

- "और यह कि हमने इस घर (काबा) को लोगों के लिए केन्द्र और शान्ति की जगह घोषित कर दिया और लोगों को आदेश दिया कि

इबराहीम जहाँ इबादत के लिए खड़ा होता है, उस जगह को हमेशा के लिए नमाज़ की जगह बना लो।" —क़ुरआन, 2:125

- "और लोगों में हज के लिए उद्घोषणा कर दो कि वे तुम्हारे पास हर दूर-दराज़ जगह से पैदल चलकर और ऊँटों पर सवार होकर आएँ।"
—क़ुरआन, 22:27

- अल्लाह ने प्रतिष्ठित घर काबा को लोगों के लिए (सामुदायिक जीवन के) स्थापित करने का ज़रिया बनाया और हराम (प्रतिष्ठित) महीनों और क़ुरबानी के जानवरों और क़लादों को भी (इस कार्य में सहायक बनाया)।" —क़ुरआन, 5:97

- "लोग पूछते हैं हराम महीनों में लड़ना कैसा है? कहो, इनमें लड़ना बहुत बुरा है। मगर ख़ुदा के राह से लोगों को रोकना और अल्लाह से कुफ़्र करना और मस्जिदे हराम का रास्ता ख़ुदा की इबादत करनेवालों पर बन्द करना और हरम के रहनेवालों को वहाँ से निकालना, अल्लाह के नज़दीक उससे भी ज़्यादा बुरा है और फ़ितना क़त्ल से भी बुरा है।"
—क़ुरआन, 2:217

- "हज के महीने सबको मालूम हैं। जो व्यक्ति इन निश्चित महीनों में हज की नीयत करे उसे ख़बरदार रहना चाहिए कि हज-अवधि में उससे कोई काम-वासना का कार्य, कोई बद-अमली, कोई लड़ाई-झगड़े की बात न हो और जो अच्छे कर्म भी तुम करोगे, अल्लाह उसे जानता है। और पाथेय (ज़ादेराह) साथ ले जाओ क्योंकि सबसे अच्छा पाथेय धर्मपरायणता है। अतः ऐ बुद्धिवालो! मेरी अवज्ञा से बचो।"
—क़ुरआन, 2:197

- लोगों ने समझ रखा था कि हज की इबादत में आजीविका के लिए क्रय-विक्रय ठीक नहीं है। इसका खण्डन इन शब्दों में किया गया है—

"और अगर हज के साथ-साथ तुम अपने रब का फ़ज़्ल (रोज़ी) भी

तलाश करते जाओ तो उसमें कोई हरज नहीं।"

— क़ुरआन, 2:198

लोग हज के ज़माने में मेला लगाते और वहाँ शायरी के दंगल करते और अपने पूर्वजों के कारनामों पर गर्व करते थे। इसपर रोक इन शब्दों में लगाई गई–

"और फिर जब अपने हज के अरकान (रीतियों को) अदा कर चुको तो पहले जिस तरह अपने पूर्वजों की चर्चा करते थे, उसी प्रकार अल्लाह का ज़िक्र (याद) करो, बल्कि उससे भी बढ़ कर।"

— क़ुरआन, 2:200

- मुशरिक हरम में दाख़िल न होने पाएँ। क़ुरआन के शब्दों में इसका एलान इस प्रकार हुआ–

"ऐ ईमान लानेवालो! मुशरिकीन नापाक हैं। अतः इस साल के बाद ये मस्जिदे हराम के नज़दीक न फटकने पाएँ और अगर तुम्हें ग़रीबी का डर है तो असम्भव नहीं कि अल्लाह चाहे तो तुम्हें अपने फ़ज़्ल (कृपा) से धनी कर दे। अल्लाह सर्वज्ञ और तत्वदर्शी है।"

— क़ुरआन, 9:28

"और लोगों पर अल्लाह का यह हक़ है कि जो उसके घर तक आने की शक्ति रखता हो तो वह हज करे, और जो कोई इस आदेश का पालन करने से इंकार करे, तो उसे मालूम हो जाना चाहिए कि अल्लाह सभी दुनियावालों से बेनियाज़ है।" — क़ुरआन, 5:97

इस एलान से हर उस मुसलमान पर हज फ़र्ज़ हो गया जिसके पास हज की यात्रा के लिए ख़र्च हो कि जितने दिन मक्का में ठहरे वहाँ का ख़र्च सहन कर सके और बाल-बच्चों के पास उतना पैसा छोड़ जाए कि वे उसके वापस आने तक आराम के साथ अपना ख़र्च चला सकें।

एहराम व तलबिया

जो व्यक्ति हज का इरादा करता है और घर से चल देता है और एक ख़ास सीमा पर पहुँचता है जिसे मीक़ात कहते हैं, वह मीक़ात पर अपना कपड़ा बदलता है। यह मीक़ात चारों ओर से आनेवालों के लिए निश्चित कर दी गई है। हिन्दुस्तान के हाजियों की मीक़ात यमन के पास यलमलम पहाड़ से शुरू होती है। मीक़ात के पास पहुँचकर हाजी एहराम बाँधते हैं। मर्दों के लिए एहराम दो चादरें हैं जो सिली हुई न हों। एक चादर तहमद बनाकर बाँधें, दूसरी चादर कंधे पर डाल लें। इस तरह की चादर दाहनी बग़ल से होती हुई बाएँ कंधे पर डाल दी जाए। औरतों के एहराम में वही कपड़े हैं जो उन्होंने पहन रखे हों। अन्तर यह है कि वे जिस प्रकार नमाज़ में सर से ओढ़नी ओढ़ती हैं, उसी प्रकार ओढ़ें और चेहरा खोल दें। नक़ाब न डालें। एहराम बाँधकर हज़रत इबराहीम (अलै.) की उस पुकार का जवाब दें जो उन्होंने काबा बनाते वक़्त बुलंद की थी कि चारों ओर से लोग इस काबा के दर्शन को आएँ। जवाब के शब्द ये होने चाहिएँ –

लब्बै-क अल्लाहुम-म लब्बै-क, लब्बै-क ला शरी-क ल-क-लब्बैक, इन्नलहम-द वन्निअ-म-त लक-वल मुल्क-ला शरी-क लक।

"मैं हाज़िर हूँ, मेरे अल्लाह हाज़िर हूँ, मैं हाज़िर हूँ, तेरा कोई शरीक (साझीदार) नहीं। मैं हाज़िर हूँ। बेशक प्रशंसा सब तेरे ही लिए है। नेमत सब तेरी है और सारी बादशाही तेरी है, तेरा कोई शरीक नहीं है।"

इसके बाद एहराम बाँधे, फिर जद्दा से मक्का जाए, काबा का तवाफ़ (परिक्रमा) करे और सफ़ा, मरवा के बीच सई करके हजामत बनवाए और एहराम खोल दे तथा सिले हुए अन्य कपड़े पहन ले। इसके बाद मुहम्मद (सल्ल.) के बताए हुए तरीक़े के अनुसार हज के अरकान अदा करे –

(1) 8 ज़िलहिज्जा को एहराम बाँधकर सुबह ही मिना पहुँचा जाए और एक दिन-रात वहीं ठहरा जाए।

(2) 9 ज़िलहिज्जा को नमाज़े फ़ज्र के बाद मिना से रवाना होकर अरफ़ात सूरज ढलने (ज़वाल) से पहले पहुँच जाए और वहाँ अल्लाह को याद करके अपने गुनाहों की माफ़ी माँगे।

(3) 9 ज़िलहिज्जा को मग़रिब के वक़्त रवाना हो और रात मुज़दल्फ़ा में गुज़ारे और उस रात को सोने और आराम करने में न गुज़ार दे, बल्कि वहाँ भी अल्लाह को याद करे और अपने गुनाहों की माफ़ी माँगे।

(4) 10 ज़िलहिज्जा को फ़ज्र की नमाज़ पढ़कर मुज़दल्फ़ा से मिना के लिए वापस रवाना हो और वहाँ पहुँचकर पहले क़ुरबानी करे, फिर हजामत बनवाकर नहाये और एहराम उतारकर कपड़े बदले।

(5) कपड़े बदलने के बाद 10,11,12,13 ज़िलहिज्जा तक रमी जिमार (कंकरी मारना) करे।

(6) 10 ज़िलहिज्जा को इससे फ़ारिग़ होकर मक्का में बैतुल्लाह (काबा) जाकर हाज़री दे, वहाँ तवाफ़ करे और सई करे। जिस घर तक पहुँचने की ख़ाहिश लेकर इतने दूर-दराज़ का सफ़र किया था उस घर पर पहुँचने के बाद इस नेमत का शुक्र अदा करे और अल्लाह की बख़्शिश से झोलियाँ भरकर फिर मिना में वापस आए। यही वह सौभाग्य है जिसके बारे में मुहम्मद (सल्ल.) ने इस प्रकार फ़रमाया है–

"सही हज का बदला तो बस जन्नत ही है।"

दूसरी जगह फ़रमाया–

"जिसने अल्लाह के लिए हज किया और उसमें काम-वासना एवं बुराइयों से बचा रहा, वह इस तरह पलटा जैसे आज ही अपनी माँ के पेट से पैदा हुआ हो।"

शआइरुल्लाह (अल्लाह के शआइर)

शआइरुल्लाह का अर्थ है 'अल्लाह की निशानियाँ' वे निशानियाँ जिनको देखकर एक आदमी समझ ले कि ये अल्लाह के दीन के चिह्न और निशानियाँ हैं। हर धर्म के कुछ शआइर (चिह्न) होते हैं। कम्युनिस्ट के शआइर, लाल निशान, हथोड़ा और दरांती हैं। हिन्दुओं के शआइर चोटी, ज़न्नार (जनेऊ) और मन्दिर हैं। कड़ा-कृपान और केश सिक्खों के शआइर हैं। सलीब, गिरजा और क़ुरबानगाह ईसाइयों के। मस्जिद, तकबीर, नमाज़, ईद, बक़रीद, हज, क़ुरबानी आदि शआइरुल्लाह अर्थात् दीने इस्लाम के शआइर हैं।

-मुसलमानों पर वाजिब है कि वे शआइरुल्लाह की पाबंदी करें, उसकी बड़ाई (महानता) पर आँच न आने दें। इनको छोड़ना सख़्त गुनाह है।

हज से संबंधित शआइर

> "यक़ीनन सफ़ा और मरवा अल्लाह की निशानियों में से हैं। इसलिए जो व्यक्ति काबा का हज या उमरा करे उसके लिए कोई गुनाह की बात नहीं है कि वह इन दोनों पहाड़ियों के बीच सई करे और जो स्वेच्छा से कोई भलाई का काम करेगा अल्लाह को इसका ज्ञान है, वह उसकी क़द्र करनेवाला है।" —क़ुरआन, 2:158

याद होगा कि हज़रत इबराहीम (अलै.) हज़रत हाजरा (रज़ि.) और हज़रत इसमाईल (अलै.) को जब यहाँ लाए थे और उन्हें छोड़कर चले गए थे तो हज़रत हाजरा पानी की तलाश में सफ़ा पर चढ़कर इधर-उधर देखती थीं – फिर दौड़कर दूसरी तरफ़ मरवा पर चढ़ जातीं। फिर सफ़ा पर आतीं और मरवा पर जातीं। इस तरह उन्होंने सात चक्कर लगाए थे। अल्लाह को हज़रत हाजरा (रज़ि.) की यह अदा बहुत पसन्द आई और 'सई' (सफ़ा और मरवा के बीच सात बार दौड़कर आने-जाने) को हज के चिह्न और निशानियाँ नियत कर दिया। जो मुसलमान हज करने जाते हैं, वे सई भी करते हैं।

हज का मक़सद

क़ुरआन में है –

"ताकि वे फ़ायदे देखें जो यहाँ उनके लिए रखे गए हैं और कुछ निश्चित दिनों में उन जानवरों पर अल्लाह का नाम लें जो उसने उन्हें प्रदान किए हैं। ख़ुद भी खाएँ और ग़रीब और मुहताज को भी दें। फिर अपना मैल-कुचैल दूर करें और अपनी नज़्रें पूरी करें और इस प्राचीन घर का तवाफ़ (परिक्रमा) करें।

और तुम्हारे लिए मवेशी जानवर हलाल किए गए सिवाय उन चीज़ों के जो तुम्हें बताई जा चुकी हैं। अतः बुतों की गन्दगी से बचो, झूठी बातों से परहेज़ करो, अल्लाह के सच्चे बन्दे बनो, उसके साथ किसी को शरीक (साझी) न करो और जो कोई अल्लाह के साथ शिर्क करे तो गोया वह आसमान से गिर गया। अब या तो उसे परिन्दे उचक ले जाएंगे या हवा ऐसी जगह ले जाकर फेंक देगी जहाँ उसके चीथड़े उड़ जाएँगे।

यह है असल मामला (इसे समझ लो) और जो अल्लाह के निर्धारित किए हुए शआइर का एहतिराम करे तो यह दिलों के तक़वा (ईश-भय) से है।

तुम्हें एक निर्धारित समय तक उन (क़ुरबानी के जानवरों) से लाभ उठाने का अधिकार है। फिर उन (के क़ुरबान करने) की जगह उसी प्राचीन घर के पास है। हिदायत के लिए हमने क़ुरबानी का एक तरीक़ा निश्चित किया है, ताकि (इस उम्मत के) लोग उन जानवरों पर अल्लाह का नाम लें जो उनको दिए हैं।" – 22:28-34

अल्लाह फ़रमाता है कि हज के दिनों में इन बातों को देखो जो तुम्हारे लिए उसमें रख दी हैं। हज शुरू से आख़िर तक क़ुरबानी ही क़ुरबानी है और हर

सांस इबादत ही इबादत। इसमें वक़्त की क़ुरबानी है, माल की क़ुरबानी है, जानवरों की क़ुरबानी है, शारीरिक शक्ति की क़ुरबानी है, सुख-चैन की क़ुरबानी है। सुबह कहीं, शाम कहीं, दोपहर कहीं और रात कहीं। हर वक़्त दुआएँ माँगना, रातों को जागना, दिल का हर वक़्त अल्लाह की ओर लगा रहना.....। ये वे बातें हैं जो हज का मक़सद हैं। हज से वापस आने के बाद हाजी में ये बातें रहनी चाहिएँ, ताकि लोग उसे देखकर पहचान लें कि हज की नेमतें समेटकर आया है। हज करने के बाद यदि मक़सद खो दिया; तो उसका सब कुछ ख़त्म हो गया।

इसके बाद अल्लाह फ़रमाता है कि सच्चे बन्दे बन जाओ। अल्लाह को एक मात्र पूज्य-प्रभु बनाकर एकग्रचित हो जाओ। उसके साथ किसी को शरीक न करो– न उसके अस्तित्व में, न उसके गुणों में, न उसके आदेशों में और न ही उसके क़ानून में।

तुमने देखा कि हज में सभी हाजी एक रंग (अल्लाह के रंग) में रंगे हुए होते हैं। उनमें न ज़ात-पात का फ़र्क़ होता है, न ऊँच-नीच का झगड़ा, न इस बात का अन्तर कि मैं अमुक जगह का हूँ और तुम अमुक जगह के। इससे यह सीखो कि तुम एक विश्व कुल हो, दुनिया के सारे मुसलमान तुम्हारे भाई हैं, उनका दुख तुम्हारा दुख, उनका सुख तुम्हारा सुख, यदि पूरब में किसी मुसलमान को काँटा चुभे तो तुम पश्चिम में उसकी चुभन महसूस करो। तुम सब मिलकर सीसा पिलाई हुई दीवार बन जाओ।

तुमने देखा होगा कि हज के दौरान तुम्हारा एक अमीर होता है। तुम वही करते हो जो वह कहता है। तुमने हज में क्या शिक्षा पाई; उसको आम करो। अल्लाह के बन्दों को वही पैग़ाम सुनाओ। याद करो, तुमने इक़रार किया था कि हम ने सुना और उसका पालन किया।

मुहम्मद (सल्ल.) ने हिज्जतुल विदाअ (आख़िरी हज) में जो संदेश दिया था, उसमें एक ताकीद और हुक्म यह है कि तुममें हर व्यक्ति इस्लाम का संदेशवाहक है। दीन की जो बात तुमको मालूम है, वह दूसरों को बताओ।

"यहाँ तक कि अल्लाह का दीन सारी दुनिया पर छा जाए।"

लतीफ़ा

क़ुरआन में है –

"आज हमने तुम्हारे दीन को तुम्हारे लिए हर तरह से मुकम्मल कर दिया और तुमपर अपनी सारी नेमत तमाम (समाप्त) कर दी।"

एक बार हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि.) ने एक यहूदी के सामने यह आयत पढ़ी। उसने कहा– "अगर हमको यह आयत मिली होती तो हम उस दिन को ईद का दिन बना लेते जिस दिन यह आयत उतरी।"

हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि.) ने कहा, "अल्लाह की क़सम! जिस दिन यह आयत उतरी उस दिन हमारी दो ईदें थीं। वह दिन जुमा का था जो कि ईदुल मोमिनीन है और उसी दिन ईदुज़-ज़ुहा भी थी।"

यह गौरव मुसलमानों को नसीब हुआ; अल्लाह के फ़ज़्लो-करम और हज़रत इबराहीम (अलै.) की क़ुरबानियों की बदौलत। बहुत ख़ुशक़िस्मत है वह व्यक्ति जो दीने इबराहीमी, दीने हनीफ़ और दीने इस्लाम पर अमल करने के लिए नबी (सल्ल.) को नमूना बनाए।

हज़रत इबराहीम (अलै.) की वापसी

इस्लाम के प्रचार-प्रसार के लिए हज़रत इबराहीम (अलै.) ने दो बड़े केन्द्र स्थापित कर दिए। एक सुदूम में हज़रत लूत (अलै.) की देख-रेख में, दूसरा मक्का में हज़रत इसमाईल (अलै.) की देख-रेख में। अब बैतुल-मक़दिस वापस आए। यह भी एक बड़ी मर्कज़ी (केन्द्रीय) जगह थी। सोचने लगे कि इसे भी तबलीग़ (धर्म-प्रचार) का केन्द्र बनना चाहिए। लेकिन सवाल यह पैदा हुआ कि यहाँ किसको अपना उत्तराधिकारी बनाएँ। हज़रत इसमाईल (अलै.) के अलावा कोई औलाद न थी और न हज़रत लूत (अलै.) के अलावा कोई भतीजा। इसी सोच में रहा करते थे कि अचानक दो फ़रिश्ते आ गए और उन्होंने दूसरे बेटे के जन्म लेने की ख़ुशख़बरी सुनाई। इस ख़ुशख़बरी के सुनाते समय जो

दिलचस्प बातचीत हुई वह क़ुरआन के शब्दों में इस प्रकार है–

"फ़रिश्तों ने कहा, डरो नहीं, हम तो तुमको एक ज्ञानवान लड़के की बशारत (ख़ुशख़बरी) देने आए हैं।" –क़ुरआन, 15:53

इस बशारत पर हज़रत इबराहीम (अलै.) को आश्चर्य हुआ –

"क्या तुम इस बुढ़ापे में मुझे औलाद की बशारत देते हो। ज़रा सोचो तो सही कि ये तुम कैसी बशारत मुझे दे रहे हो।"

–क़ुरआन, 15:54

वास्तव में बात यह थी कि उस समय हज़रत इबराहीम (अलै.) की उम्र सौ साल और हज़रत सारा (रज़ि.) की उम्र नब्बे साल की थी। इस उम्र में औलाद का होना कैसे सम्भव था ?

"फ़रिश्तों ने जवाब दिया, हम तुमको बिल्कुल सच्ची ख़ुशख़बरी (शुभ-सूचना) सुनाते हैं, तुम निराश न हो।" –क़ुरआन, 15:55

हज़रत इबराहीम ने कहा –

"अपने रब की रहमत से मायूस गुमराह लोग ही हुआ करते हैं।"

–क़ुरआन, 15:56

यानी मुझे विश्वास है कि ऐसा ही होगा। हज़रत सारा भी खड़ी ये बातें सुन रही थीं, वह सहसा हँस पड़ीं।

"उसकी स्त्री भी खड़ी थी। वह इसपर हँस पड़ी।"

–क़ुरआन, 11:71

फिर फ़रिश्तों ने विस्तार से बशारत के शब्द सुनाए–

"फिर हमने उसको इसहाक़ की और इसहाक़ के बाद याक़ूब की ख़ुशख़बरी दी।" –क़ुरआन, 11:71

"और हमने उसे इसहाक़ की बशारत दी कि वह एक नबी होगा, नेक

बन्दों में से।" — क़ुरआन, 37:112

यह सुनकर हज़रत सारा के आश्चर्य की सीमा न रही। अब औरत की प्रकृति को देखिए, वे बोलीं–

"हाय मेरा दुर्भाग्य! क्या अब मेरे यहाँ सन्तान होगी, जबकि मैं बुढ़िया हो गई और यह मेरे पति भी बूढ़े हो चुके हैं! यह तो बड़ी अजीब बात है।" — क़ुरआन, 11:72

फ़रिश्तों ने कहा–

"अल्लाह के हुक्म पर ताज्जुब करती हो? ऐ इबराहीम के घरवालो! तुम लोगों पर अल्लाह की रहमत और बरकतें हैं, और यक़ीनन अल्लाह प्रशंसा व तारीफ़ योग्य है और बड़ी शानवाला है।"
— क़ुरआन, 11:73

"यह सुनकर उस (इबराहीम अलै.) की बीवी (सारा) चौंक पड़ी और उसने अपना मुँह पीट लिया और कहने लगी, बूढ़ी बाँझ!"
— क़ुरआन, 51:29

उस वक़्त ख़ुशी और आश्चर्य के मिले-जुले भाव से हज़रत सारा की अजीब हालत थी, जैसे वे ख़ुशी और ताज्जुब के मारे बौखला गई हों। अब फ़रिश्तों ने अन्तिम आदेश सुनाया–

"यही होगा, तेरे रब ने यही फ़रमाया है और वह हिकमतवाला है और सब कुछ जाननेवाला।" — क़ुरआन, 51:30

इस ख़ुशख़बरी के अनुसार अल्लाह ने हज़रत इबराहीम (अलै.) को एक नेक बेटा और प्रदान किया, यानी हज़रत इसहाक़ (अलै.) का जन्म हुआ। हज़रत इसहाक़ (अलै.) की औलाद में अल्लाह ने बड़ी बरकत दी। हज़रत इसहाक़ के बाद हज़रत याक़ूब (अलै.) नबी हुए। यानी तीन पुश्तें नुबूवत आले इबराहीम में ही रही और फिर जो नबी हुए वे आले याक़ूब (अलै.) ही थे।

"और हमने उसको (इबराहीम को) इसहाक़ और याक़ूब प्रदान किए और उसके वंश में हमने नुबूवत और किताब रख दी और उसको दुनिया में इसका बदला दिया और आख़िरत में भी नेक लोगों में से होगा।" —क़ुरआन, 29:27

यह सब अल्लाह ही का फ़ज़्ल है, जिसे वह चाहे दे। ये सभी बड़े-बड़े नबी और रसूल सब याक़ूब (अलै.) के वंश में से थे— यूसुफ़, दाऊद, सुलैमान, अय्यूब, मूसा, हारून, ज़करिया, यहया, ईसा, यसअ, यूनुस और बहुत-से अनगिनत नबी। इन सबपर अल्लाह की सलामती हो।

इबराहीम (अलै.) की ख़ूबियाँ एक नज़र में

- हज़रत इबराहीम (अलै.) अपने आप में एक उम्मत थे, यानी उन्होंने अकेले इतना बड़ा काम किया जो वास्तव में एक पूरी उम्मत के करने का था।
- वे हनीफ़ (यक्सू) थे। उन्होंने अल्लाह के दीन को हर तरफ़ से कटकर सिर्फ़ अल्लाह के होकर अपनाया और आगे बढ़ाया।
- वे पूरे-के-पूरे मुस्लिम थे, यानी अल्लाह के आज्ञापालक। किसी एक जगह भी उनका क़दम अल्लाह के आज्ञापालन से बाहर नहीं पड़ा हालाँकि ज़िन्दगी में बड़ी कठिन परिस्थितियाँ आईं।
- वे सारी दुनिया के लिए इमाम बने। आज जो मशहूर दीन और धर्म पाए जाते हैं उन सब में हज़रत इबराहीम (अलै.) की बड़ाई मौजूद है। यहूदी भी उनको मानते हैं; ईसाई भी, हिन्दू भी और मुसलमान तो मानते ही हैं।

वसीयत

"और इसी तरीक़े पर चलने की हिदायत इबराहीम ने अपनी औलाद को की थी और उसी की वसीयत याक़ूब (अलै.) अपनी औलाद को कर गया। उसने कहा था कि मेरे बच्चो! अल्लाह ने तुम्हारे लिए यही दीन पसन्द किया है। अतः मरते दम तक मुस्लिम (आज्ञाकारी) ही रहना। फिर क्या तुम उस वक़्त

मौजूद थे, जब याक़ूब इस दुनिया से जा रहा था? उसने मरते वक़्त अपने बेटों से पूछा, "बच्चो! तुम मेरे बाद किसी बन्दगी करोगे?" उन सबने जवाब दिया, "हम उसी एक ख़ुदा की बन्दगी करेंगे जिसे आपने और आपके बुज़ुर्गों– इबराहीम, इसमाईल और इसहाक़ ने ख़ुदा माना है और हम उसी के मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं।" वे कुछ लोग थे जो गुज़र गए। जो कुछ उन्होंने कमाया, वह उनके लिए है और जो कुछ तुम कमाओगे, तुम्हारे लिए है। तुमसे यह न पूछा जाएगा कि वे क्या करते थे?" – क़ुरआन, 2:132-134

अल्लाह के दोस्त

"और दीन (धर्म) की दृष्टि से उस व्यक्ति से अच्छा कौन हो सकता है जिसने अपने आपको अल्लाह के आगे झुका दिया और अपना आचरण नेक रखा और एकचित्त होकर इबराहीम के तरीक़े की पैरवी की, उस इबराहीम के तरीक़े की जिसे अल्लाह ने अपना दोस्त बना लिया था।" – क़ुरआन, 4:125

और मूर्ख कौन?

क़ुरआन ने बताया कि जो व्यक्ति इबराहीम (अलै.) की तरीक़े से इंकार करता है, वह मूर्ख है–

"अब कौन है जो इबराहीम के तरीक़े से मुँह मोड़ सके? जिसने ख़ुद अपने आपको मूर्खता और जिहालत में डाल दिया हो उसके सिवा कौन यह हरकत कर सकता है? इबराहीम तो वह व्यक्ति है जिसको हमने दुनिया में अपने काम के लिए चुन लिया था और आख़िरत में उसकी गणना नेक लोगों में होगी। उसका हाल यह था कि जब उसके रब ने उससे कहा 'मुस्लिम हो जा, तो उसने तत्काल कहा, मैं दुनिया के मालिक का मुस्लिम (आज्ञापालक) हो गया।"

– क़ुरआन, 2:130-131

हज़रत इबराहीम (अलै.) की सन्तान

पिछले पृष्ठों में यह बात आ चुकी है कि अल्लाह ने हज़रत इबराहीम (अलै.) को दो निहायत नेक बेटों से नवाज़ा था, जिनके नाम हज़रत इसमाईल (अलै.) और इसहाक (अलै.) थे।

हज़रत इसमाईल (अलै.) बड़े थे। उनकी माँ का नाम हज़रत हाजरा (अलै.) था। हज़रत इबराहीम (अलै.) ने इस्लाम फैलाने के तीन केन्द्र बनाए। उनमें से एक वह जगह थी जहाँ हज़रत हाजरा (अलै.) और हज़रत इसमाईल (अलै.) को बसाया। उस समय न वहाँ आबादी थी और न खाने-पीने का सामान मिल सकता था। क़ुरआन करीम की उन गवाहियों को फिर याद कर लीजिए जो पिछले पृष्ठों में गुज़र चुकी हैं। इन आयतों में उस जगह के चयन और कारणों का उल्लेख भी है यानी उस जगह को क्यों बसाया था। –

> "ऐ हमारे रब! मैंने एक ऐसी जगह में जहाँ न पानी है और न पैदावार हो सकती है अपनी औलाद के एक हिस्से (हाजरा और इसमाईल) को तेरे प्रतिष्ठित घर (यानी जहाँ बाद में काबा बनाया गया) के पास बसा दिया है। परवरदिगार! यह मैंने इसलिए किया है कि वे वहाँ नमाज़ क़ायम करें। तो तू लोगों के दिलों को उनकी ओर माइल (आकृष्ट) कर दे और उन्हें खाने को फल दे; ताकि वे तेरे शुक्रगुज़ार बनें।"
>
> – क़ुरआन, 14:37

हज़रत इबराहीम (अलै.) ने यह दुआ भी की थी–

> "और ऐ मेरे रब! उन लोगों (हज़रत हाजरा और इसमाईल की औलाद) में ख़ुद उन्हीं की क़ौम में से एक ऐसा रसूल उठा जो उन्हें तेरी आयात सुनाए। उनको किताब व हिकमत की शिक्षा दे और उनकी ज़िन्दगी सँवार दे। तू बड़ा ज़बरदस्त और हिकमतवाला है।"
>
> – क़ुरआन, 2:129

अल्लाह ने हज़रत इबराहीम (अलै.) की यह दुआ भी क़बूल फ़रमाई। हज़रत इसमाईल (अलै.) से जो नस्ल चली, उसमें अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) को अपना आख़िरी नबी बनाया और हुज़ूर (सल्ल.) को किताब यानी क़ुरआन करीम प्रदान किया और आप (सल्ल.) को क़ुरआन को समझने, क़ुरआन के हुक्मों को फैलाने और दिलों को मोहने की हिकमत प्रदान की।

हज़रत इबराहीम (अलै.) के छोटे बेटे हज़रत इसहाक़ (अलै.) हज़रत सारा से पैदा हुए थे। हज़रत सारा को अल्लाह ने यह बड़ाई दी कि वह उम्मुल अम्बिआ (नबियों की माँ) के नाम से मशहूर हैं। यह इस तरह कि हज़रत इबराहीम (अलै.) के बेटे हज़रत इसहाक़ (अलै.) हुए। हज़रत इसहाक़ (अलै.) को अल्लाह ने याक़ूब (अलै.) जैसा बेटा अता फ़रमाया। हज़रत याक़ूब (अलै.) की नस्ल में कई हज़ार साल तक बराबर हज़ारों नबी होते रहे हैं। क़ुरआन करीम में ऐसे कुछ नबियों के नाम भी आए हैं। जैसे :–

> "फिर हमने इबराहीम को इसहाक़ और याक़ूब जैसी औलाद दी और हर एक को सीधी राह दिखाई–वही सीधी राह जो उससे पहले नूह को दिखाई थी और उसकी नस्ल से हमने दाऊद, सुलैमान, अय्यूब, यूसुफ़, मूसा और हारून को (सीधी राह दिखाई)। इस तरह हम नेक काम करनेवालों को उनके नेकी का बदला देते हैं। (उसी की औलाद से ज़करिया, ईसा और इलियास को (पैदा किया और उन्हें भी सीधी राह दिखाई)। उनमें से हर एक नेक (धर्मपरायण) था। (इबराहीम के ख़ानदान से) इसमाईल, यस्अ, यूनुस और लूत को (रास्ता दिखाया)।
>
> उनमें से हर एक को हमने तमाम दुनियावालों पर बड़ाई दी। इसके अतिरिक्त उनके पुरखों और उनके परिवार और उनके भाई-बन्दों में से बहुतों को हमने नवाज़ा (यानी नबी बनाया)। उन सबको अपनी सेवा (अल्लाह के दीन को फैलाने) के लिए चुन लिया और सीधे रास्ते पर डाला।" — क़ुरआन, 6:84-87

हज़रत इबराहीम (अलै.) ने इस्लाम के प्रचार का दूसरा केन्द्र फ़िलस्तीन को बनाया और हज़रत सारा और हज़रत इसहाक़ (अलै.) को वहाँ ठहराया और इस्लाम की दावत व तबलीग़ (धर्म-प्रचार) का ज़िम्मेदार बनाया।[1] इन सभी नबियों ने सारी दुनिया में इस्लाम के अक़ीदों को लोगों के दिलों में बिठाया और बताया कि नेकी क्या है और बुराई किसे कहते हैं। नेकी को किस तरह फैलाया जाए और बुराई को किस तरह दबाया जाए। ये सब इंसानों को इंसान बनानेवाले, इंसानियत के उसूल सिखानेवाले, उन उसूलों पर ख़ुद चलनेवाले और दूसरों को चलानेवाले थे। आज दुनिया में जहाँ-जहाँ भी जितनी भी नेकी पाई जाती है, इन्हीं नबियों (अलै.) के क़दमों की बरकत से है। इन नबियों (अलै.) की शिक्षा से जहाँ-जहाँ लोग हटे या कटे या इस शिक्षा को भुला दिया तो शैतान ने उन्हें उचक लिया और ग़लत दीन व धर्म पर डाल दिया। यही कारण है कि आज कहीं वास्तविक शिक्षा के साथ लोगों ने अपनी ओर से ग़लत बातें मिला दीं, कहीं असल शिक्षा को ही भुला दिया गया, और आज ऐसे लोगों की समझ में यह नहीं आता कि दीन वास्तव में असल दीन है या गोरख-धन्धा।

क़ुरआन में जगह-जगह अल्लाह ने अपने नबियों की ख़ूबियाँ बयान फ़रमाई हैं। कहीं फ़रमाया–

"और हर एक को हमने नेक बनाया।"

"और हमने उनको इमाम बना दिया जो हमारे हुक्म से (लोगों को सीधी) राह दिखाते थे और हमने वह्य के द्वारा नेक कामों के करने की और नमाज़ क़ायम करने और ज़कात देने की हिदायत की, और वे हमारी इबादत करनेवाले और यकसू भी थे।" – क़ुरआन, 12:73

कहीं उनको जन्नत की बशारत देनेवाला और दोज़ख़ से डरानेवाला फ़रमाया, कहीं उन्हें अपना बरगुज़ीदा (पसंदीदा) और मुन्तख़ब (चुना हुआ) बन्दा फ़रमाया। मतलब यह कि उन सारी अच्छी बातों का ज़िक्र है जो उन सभी

1. तीसरा दावत का केन्द्र सुदूम था, जहाँ हज़रत लूत (अलै.) को ज़िम्मेदार बनाया था।

नबियों में थीं और वही इंसानियत की बुनियाद बनीं। इसके बाद दुनिया भर के लोगों को उनकी पैरवी का हुक्म दिया और यह हुक्म अपने आख़िरी रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) के द्वारा इस तरह पहुँचाया–

"ऐ नबी कह दो।"

"ऐ नबी उनका ज़िक्र करो।"

"ऐ नबी क़ुरआन में उनका हाल पढ़कर सुनाओ।" इत्यादि।

इसके बाद आख़िरी बात यह फ़रमा दी कि जो लोग उनकी पैरवी करेंगे, वही इस दुनिया में भी कामयाब रहेंगे और वही आख़िरत में भी कामयाब रहेंगे।

